Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गांधीमार्ग की चुनौतियाँ

डॉ. श्याम शंकर सिंह, प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स,दोईमुख, ईटानगर

सारांश

गांधी मार्ग की चर्चा आज भी होती है।यह चर्चा यह सोचने के लिए विवश कर देती है कि यह मार्ग आज भी चाहे-अनचाहे जीवन पथ पर दिखाई देने लगता है। लेकिन उसमें ऐसा बहुत कुछ है जिसके कारण जनमानस को उससे दूरी की अनुभूति होती है। गांधी मार्ग का निर्माण उस समय हुआ था जब देश गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था। देश साम्राज्यवाद-उपनिवेशवाद की जकड़ में फँसा हुआ था। जकड़ की अनुभूति बहुत से लोगों में हो रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चल रहे संघर्ष के दौरान गांधी मार्ग का संवादी स्वर देश के अधिकांश हिस्सों में गूंज रहा था। लेकिन इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि उसी समय देश में विसंवादी स्वर भी विद्यमान थे। देश में बहुत से ऐसे क्षेत्र थे जहां राजतांत्रिक व्यवस्था थी और वहाँ की जनता के एक हिस्से में गांधी मार्ग की चर्चा कम ही सुनाई पड़ती थी। गांधी मार्ग देश के कुछ हिस्सों में नहीं पहुँच पाया था। अतः वहाँ उसकी परख शेष थी। विसंवादी स्वर भी कम न थे। गांधी मार्ग को सबसे बड़ी चुनौती जिन्ना से मिल रही थी जिन्हें बाद में पाकिस्तान के संस्थापकऔर आगे चलकर पाकिस्तानी जनता में महान नेता,सबसे बड़े रहनुमा के रूप में जाना गया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस को भी गांधी मार्ग से असंतोष था। समाजवादियों का आविर्भाव भी उसी समय हो रहा था। कुछ क्रांति समर्थक भी थे जो परिवर्तन की धीमी गति से असंतुष्ट थे और हिंसा से परहेज़ नहीं करते थे। पंजाब प्रांत में सिक्खों के एक हिस्से पर गांधी मार्ग का प्रभाव न के बराबर था। पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों में भी गांधी मार्ग का प्रभाव नहीं पड़ पाया था। देश के कई हिस्सों में कॉम्युनिस्ट गांधी मार्ग से दूरी बनाए हुए थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना उन्हीं दिनों हुई थी जो कई मुद्दों पर गांधी मार्ग से असहमत था। दक्षिणपंथी राजनीति का उभार भी उन्हीं दिनों हो रहा था। हिंदू राष्ट्रवादियों की संख्या भी कम न थीजो गांधी मार्ग से दूरी महसूस कर रहे थे।कहने का अभिप्राय यह है कि गांधी मार्ग पर फिर से विचार करते समय विसंवादी स्वरों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। जवाहरलाल नेहरू भी गांधी मार्ग से कुछ मुद्दों पर असहमत थे और जो बाद में आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में जाने गए और जिनके मॉडल का प्रभाव काफ़ी दिनों तक रहा।प्रस्तुत आलेख के उत्स उल्लिखित संवादी-विसंवादी स्वर हैं। गांधी मार्ग की चुनौतियों को इन्हीं संदर्भों में व्याख्यायित करने का प्रयत्न किया गया है।

बीज शब्द: स्वच्छता,सच्चिदानंद,सत्याग्रह,अहिंसा,लोकमंगल,हृदय परिवर्तन।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गांधी मार्गकी चुनौतियाँ इसी से सिद्ध है कि गांधी जी का जन्म दिवस राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है।उनका जन्म दिवस अंतर्राष्ट्रीयअहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। सन् 2017 ई. में चंपारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष को स्वच्छाग्रह के रूप में मनाया गया। उनका स्मृति दिवस शहीद दिवस, सर्वोदय दिवस और नशामुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे नाम पट्टिकाओं और मूर्तियों के रूप में न जाने कहाँ-कहाँ विद्यमान् हैं। वेअनेक शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। विश्व के कई देशों ने उनके सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत से प्रेरणा ली।

गांधीजी ने सत्यके आग्रह पर, सचाई पर क़ायम रहने पर ज़ोर दिया है। इसे उन्होंने सिद्धांत के स्तर पर प्रतिपादित किया है। सर्वप्रथम उन्होंने सत्य को परिभाषित किया है। फिर इसे प्राप्त करने के साधन के रूप में अहिंसा की विवेचना की है। 'अहिंसा यानी सब जगह फैला हुआ प्रेम,सर्वव्यापी प्रेम'-'विश्व प्रेम'!नम्रता-'अहिंसा का यह एक अर्थ है,या यों कहें कि अहिंसा के अंदर नम्रता आ जाती है'। ब्रह्मचर्य('ब्रह्म की-सत्य की-खोज में चर्या यानी उसके मुताल्लिक आचार-बर्ताव'।इसके लिए 'तमाम विषयों पर रोक,क़ाबू' आवश्यक है),अस्वाद(स्वाद न लेना),अस्तेय(चोरी न करना),अपरिग्रह(जमा न रखना),अभय(तमाम बाहरी भयों से मुक्ति) आदि व्रत सत्य और अहिंसा के या सत्य के पेट में समाए हुए हैं।अस्तेय और अपरिग्रह के लिए शारीरिक श्रम द्वारा भोजन के उपायके नियम का पालन आवश्यक है। 'स्वधर्म यानी स्वदेशी',सहिष्णुता (बर्दाश्त),अस्पृश्यता-निवारण और व्रत अर्थात् 'अडिग निश्चय'-ये सभी सत्याग्रही से स्वतः जुड़ती चली जाती हैं।गांधीजी ने अपने विचारों को किस प्रकार प्रतिपादित किया है यह उल्लिखित करना सार्थक होगा।

गांधीजी ने 22.07.1930 को मंगलवार के प्रभात की प्रार्थना के बाद 'सत्य' पर प्रवचन दिया था और 29.07.1930 को मंगलवार के प्रभात वाले प्रवचन में 'अहिंसा' विषयक बातें स्पष्ट की थीं।[1] इन प्रवचनों से पता चलता है कि गांधी जी की सत्य और अहिंसा विषयक दृष्टि का बीजवपन ऋषियों, मुनियों, आचार्यों,सिद्धों,संतों और भक्तों की परंपरा में हुआ था। गांधी जी द्वारा प्रयुक्त सत्य और अहिंसा जैसे पद क्रमश: 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्म:' जैसे वाक्यों से संबंध बनाये हुए हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व करने के क्रम में उन्होंने इनसे निरन्तर प्रेरणा ग्रहण की।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गांधी जी सत्य को प्रतिपादित करने के क्रम में ईश्वर के तीन स्वरूपों-सत्,चित् और आनंद का उल्लेख करते हैं। गांधी जी 'ब्रह्म दर्शन' के लिए 'ब्रह्मचर्य का सम्पूर्ण पालन' आवश्यक समझते थे। ब्रह्म सत्य का पर्याय है,जैसा कि ऊपर उल्लिखित किया जा चुका है ।

सच्चिदानन्द का उल्लेख करने के क्रम में वे सत् से अपनी बात प्रारंभ करते हैं। सत् अस्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है वह वास्तव में है। सत्य शब्द सत् से बना है। सत्य अस्तित्व के अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है उसकी सत्ता है। सत्य ही परमेश्वर है। बहुत पहले, वाल्मीकि कृत रामायण में लोक में सत्य ही ईश्वर है जैसी उक्ति लिखी गई थी- सत्यमेवेश्वरो लोके। यह भी कि सत्य पर आधारित धर्म ही मूल है।

जहां सत्य है वहाँ ज्ञान-शुद्ध ज्ञान है।जहां सत्य नहीं है वहाँ शुद्ध ज्ञान कभी नहीं हो सकता। ऐसा गांधीजी का मानना है। इसलिए 'चित्'शब्द का उल्लेख किया गया है। चित् यानी ज्ञान। गांधीजी का तर्क है कि जहाँ सत्य ज्ञान है वहाँ 'आनंद' ही होता है वहाँ शोक,रंजोगम हो ही नहीं सकता। यहाँ गांधीजी वैदिक परम्परा से जुड़े दिखाई पड़ते हैं। बौद्ध दर्शन में दुःख की स्वीकृति है। दुःख का निषेध नहीं किया गया है।

गांधीजी सत्य की आराधना का प्रस्ताव रखते हैं। उनका कहना है कि व्यक्ति की हर प्रवृत्ति सत्य के लिए हो, उसके द्वारा ली जाने वाली हरेक साँस सत्य के लिए हो। व्यक्ति यदि सत्य की आराधना करने लगेगा तो दूसरे सारे नियम उसके हाथ सहज ही लग जाएँगे। ऐसे में नियम का पालन भी सरल हो जाएगा। सत्य के रहने पर किसी भी नियम का शुद्ध पालन संभव है।

सत्य व्यक्ति के विचार, वाणी और आचार(बर्ताव) में हो। व्यक्ति यदि सत्य की कसौटी का उपयोग करना सीख जाएगा तो उसे शीघ्र ही पता चल जाएगा कि कौन सी प्रवृत्ति उचित है और किस प्रवृत्ति का परित्याग कर दिया जाए। क्या देखने योग्य है और क्या नहीं देखने योग्य है। क्या पढ़ने योग्य है और क्या नहीं पढ़ने योग्य है।

गांधीजी ने सत्य की विवेचना के क्रम में तीन उपमानों का प्रयोग किया है : स्पर्शमणि, कामधेनु और चिन्तामणि। यदि लोहा स्पर्शमणि को स्पर्श कर ले तो स्वर्ण बन जाता है। कामधेनु सभी कामनाओं की पूर्ति करती है। चिन्तामणि सभी मनोरथों को सिद्ध करता है। सत्य में ये सारे गुण हैं।अर्थात् सत्य वह पत्थर है जिसे छू लिया जाए तो अल्प मूल्य का पदार्थ भी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बहुमूल्य हो उठता है। सत्य वह गाय है जिसे जब चाहें जितना चाहें दुह लें । सत्य वह रत्न है जिससे जो चाहें माँग लें।

सत्य की प्राप्ति अभ्यास और वैराग्य से होती है। सत्य में मन की सच्ची लगनलगाना अभ्यास है। सत्य के अलावा अन्य सभी वस्तुओं में अत्यधिक 'उदासीनता' वैराग्य है।

ऐसा भी हो सकता है हमारे लिए जो सत्य हो वह किसी और के लिए असत्य हो। गांधीजी की मान्यता है कि ऐसे में निर्णय 'शुद्ध कोशिश' के आधार पर किया जाएगा। 'अलग-अलग दिखने वाले सब सत्य एक ही पेड़ के अलग-अलग दिखने वाले अनगिनत पत्तों के समान हैं'।यहीं पर सर्व धर्म समभाव का औचित्य सिद्ध होता है जिस पर गांधीजी ने बहुत ज़ोर दिया है।

गांधी दृष्टि में भूल करने वालों के लिए भी स्थान है। व्यक्ति अपनी भूल सुधारसकता है। उसे जैसे ही अपनी भूल का अनुभव हो, भूल सुधार लेनी चाहिए।व्यक्ति में यदि कष्ट सहने की क्षमता है और वह कष्ट सहने के लिए तैयार है तो वह कष्ट सहकर भूल सुधार सकता है। व्यक्ति यदि सत्यान्वेषण के पथ पर चलता है तो उसे मर-मिटने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। उसे नि:स्वार्थ रहना होगा। गांधी जी को विश्वास था कि कोई भी व्यक्ति अन्त तक गलत रास्ते पर जाते नहीं देखा गया है। वह भटक कर ठोकर खाता है, फिर सीधे रास्ते पर चलने लगता है।

गांधीजी के लिए सत्य की आराधना ही भक्ति है। इस रास्ते के पथिक आत्मबलिदान, साहस, अपराजेयता और मरकर जीने को मूल्य मानते हैं।

उन्होंने इस प्रसंग में हरिश्चन्द्र,प्रह्लाद,रामचंद्र,इमाम हसन-हुसैन,ईसाई संतों का उल्लेख किया है। स्पष्ट हैयहाँ सार्वभौमिक सार्वकालिक दृष्टि सक्रिय है। आज पोस्ट ट्रुथ जैसी उक्ति सुनने में आती है! गांधी दर्शन आज भी चुनौती देता प्रतीत होता है। इस प्रसंग में आल्बर्ट आइनस्टाइन की ये उक्तियाँ उद्धृत करने योग्य हैं:

"शताब्दियों के बाद इस संसार के लोग बड़ी मुश्किल से यह विश्वास करेंगे कि कभी इस धरती पर ऐसा एक व्यक्ति चला था।"

सत्य और अहिंसा के रास्ते पर सीधे ही चला जा सकता है। यही इस रास्ते की विशेषता है। लेकिन यह रास्ताबहुत कम चौड़ा है। इस रास्ते पर चलना तलवार की धार पर चलने जैसा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है। नट जब डोर पर चलता है तो अत्यंत सावधानी और संतुलन की आवश्यता पड़ती है। सत्य और अहिंसा की डोर नट की डोर से भी पतली है। यदि सत्य देखना हो तो हर पल साधना से गुजरना पड़ेगा।

इस देह से सत्य को पूरी तरह से नहीं देखा जा सकता। सत्य भावना का विषय बनकर रह जाता है। श्रद्धा की आवश्यकता का अनुभव इसी समय होता है। मन में श्रद्धा आते ही अहिंसा का महत्व समझ में आने लगता है।

व्यक्ति के सामने दो रास्ते दिखाई पड़ते हैं। एक रास्ता वह है जिस पर चलते हुए उसे आने वाले संकटों को सहना पड़ेगा। दूसरारास्ता वह है जिस पर वह आने वाले संकटों को देखते हुए जिस भी वस्तु को नष्ट करना पड़े वह नष्ट करता चले। लेकिन यह दूसरा रास्ता आगे नहीं ले जाता। व्यक्ति पहले रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। दूसरे रास्ते पर उसे पहली बार में ही दिख जाएगा कि वह जिस सत्य को ढूंढ रहा था वह तो उसके भीतर है। इसलिए जैसे-जैसे वह इस रास्ते पर आगे बढ़ता जाता है वैसे-वैसे वह पीछे रह जाता है। इस क्रम में सत्य से दूरी बढ़ती चली जाती है।

इस प्रसंग को लोकमंगलवादी महात्मा गांधी ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद और हृदय परिवर्तनवाद के आधार पर एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है जो पहले चोरीकरने का काम करता था,मगर अब वह चोरी करने का काम छोड़ कर साहूकारी का काम करने लगा है। जब वह चोरी करने के काम में लगा हुआ था तब वह चोरी करने के काम के द्वारा लोगों को सताता था। उससे बचने के लिए लोग उसे दण्ड देते हैं। वह वहाँ से भाग जाता है और कहीं दूसरी जगह चोरी करता है। संयोग से वह जगह भी उन्हीं लोगों की ही निकलती है। इस तरह चोर उपद्रव करता रहता है। उसने चोरी करने के काम को ही अपना काम समझ रखा है। गांधी जी का मानना है कि ऐसी परिस्थिति में केवल इसी भावना का महत्व है कि चोरी करने वाले को समझ आ जाए। उसमें समझ विकसित हो जाने पर उसके उपद्रव से बचा जा सकता है। इस क्रम में लोगों को सहनशीलता दिखानी होगी। सहनशीलता दिखाने के क्रम में पता चलता है कि चोर अन्य लोगों से अलग व्यक्ति नहीं है। गांधी दृष्टि यह मानती है कि समाज में सभी को अपना मानना चाहिए, सभी को मित्र मानना चाहिए।इसलिए चोरी करने वाले को दण्ड देने की आवश्यकता नहीं है।लेकिन उपद्रव सहते जाने में ही बात समाप्त नहीं हो जाती। चोरी करने के काम में लगा हुआ व्यक्ति यदि भाई-बन्धु निकला तो हम उसमें यह भावना पैदा करें कि वह हमारा भाई-बन्धु है। हमें उन्हें अपनाने का उपाय ढूंढना है। इस प्रक्रिया में हमें कष्ट

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सहना पड़ सकता है। अहिंसा का रास्ता यही है। इस रास्ते पर हमें दुख उठाना पड़ सकता है। अटूट धैर्य की आवश्यकता का अनुभव हो सकता है।धैर्य रहने पर हमें वही चोर साहूकार के रूप में दिखाई पड़ता है।ऐसा व्यक्ति बन जाता है जिससे लोग उपयोग करने के लिए धन माँग कर ले जाते हैं और उपयोगिता के विचार से माँग कर लिए हुए धन पर उसे ब्याज देते है।ऐसी अवस्था में हमें सत्य स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगता है।इस तरह हम दुनिया को मित्र बनाना सीखते हैं।ईश्वर की,सत्य की महिमा अच्छी तरह से समझ में आने लगती है। कठिनाइयाँझेलनी पड़तीहैं लेकिन शांति,सुख में वृद्धि होती है।हमारा साहस,दिलेरी(बहादुरी) और हिम्मत(कोई कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता या बल) बढ़ती है। हमें नित्य और अनित्य में अंतर अधिक अच्छी तरह से समझ में आने लगता है। क्या करना है और क्या नहीं करना है- यह हम भली-भाँति पहचान जाते हैं।ख़ुदी('खुद' का भाव) गलने लगती है। नम्रता में वृद्धि होती है। जमा रखने की आदतस्वतः घट जाती है।तन में भरी हुई मैल दिन-प्रतिदिन कम होती जाती है।गांधीजी ने एक जगह लिखा है कि 'बिन-ज़रूरी परिग्रह से पड़ोसी को चोरी के लालच में फँसाते हैं'। ऊपर उल्लिखित किया जा चुका है कि सत्याग्रही गांधीजी अस्तेय-व्रत के प्रवक्ता थे।

हिंसा के सम्बंध में गांधीजी की अवधारणा मौलिक है। उन्होंने हिंसा के कुछ उदाहरण इस प्रकार दिए हैं-उनकी दृष्टि में किसी को मारना हिंसा है; तमाम ख़राब विचार हिंसा है; जल्दबाजी हिंसा है; झूठ बोलना हिंसा है; द्वेष-बैर-डाह हिंसा है; किसी का बुरा चाहना हिंसा है; जगत के लिए आवश्यक वस्तुओं पर अधिकार रखना हिंसा है। लेकिन जो कुछ हम खाते हैं वह जगत के लिए ज़रूरी है।

गांधीजी अमूर्छित स्वरूप की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। इसके अन्तर्गत अगर विचार में हम देह के तमाम लगाव छोड़ देते हैं तो आख़िर में देह हमें छोड़ देती है। यह अमूर्छित स्वरूप ही सत्यनारायण है। यह दर्शन अधीरता से नहीं होते।यह समझकर कि देह अपनी नहीं है वह तो (दूसरों को देने के लिए मिली हुई)पराई चीज़ है,इसका उपयोग करते हुए व्यक्ति को अपनी राह तय करनी चाहिए।

अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है। अहिंसा और सत्य ताने-बाने की तरह एक-दूसरे में मिले हुए हैं। सत्य साध्य है,मक़सद है तो अहिंसा साधन है,ज़रिया है। साधन पर व्यक्ति का वश है। साधन की चिन्ता करते रहने से सत्य के दर्शन एक-न-एक दिन अवश्य होंगे। हमारे मन में इस प्रकार का निश्चय बना रहना चाहिए। रास्ते में चाहे जितने संकट उपस्थित हों, बाहर-बाहर से कितनी ही हार दिखाई दे, व्यक्ति का विश्वास नहीं डिगना चाहिए। सत्य है-इस

मंत्र का जप करते रहना चाहिए। सत्य के साक्षात्कार का एक ही रास्ता है, एक ही साधन है वह है अहिंसा।व्यक्ति को अहिंसा का परित्याग नहीं करना चाहिए। गांधीजी का यह भी कहना है कि जिस सत्यरूप परमेश्वर के नाम से इस प्रकार की प्रतिज्ञा की गई है वही इसे निभाने का बल देगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि गांधीमार्ग के प्रचलन में सन्मार्ग का योग है। वे सत् पथ के पथिक थे। उन्होंने सत्य को जिया था। उनकी आत्मकथा का नाम ही है: 'सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी'। अहिंसा को उन्होंने अपने जीवन से प्रदर्शित किया था। वे पाँच बार हिंसा के शिकार हुए। फिर भी वे सत्य और अहिंसा के पथ से नहीं डिगे।

गांधीजी ने कहा था-'मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।' गांधीमार्ग की चर्चा इसलिए भीकी जाती है कि गांधीजी का व्यक्तित्व जनमानस के अवचेतन मानस में न जाने कितने रूपों में विद्यमान है। जनता ने उन्हें अपने समय में बापू के रूप में जाना, राष्ट्रपिता के रूप में समझा, महात्मा के रूप में देखा, राजनेता माना। जनजीवन से संपृक्त व्यक्ति के रूप में भी वे कम ख्यात नहीं हुए।

उन्होंने जनता के हृदय में जगह बनाई थी। इसके पीछे था उनका व्यक्ति और जन का एकीकरण वाला रूप! इसके कारण जनता उनके साथ हो ली। साधारण जनता काम करके गुजारा करती है। गांधीजी भी इसी रास्ते पर चले। इससे जनता का अपने कर्ममय जीवन पर विश्वास बढ़ा। वह काम को चुनने में छुआछुत और ऊँच-नीच वाली सदियों पुरानी दृष्टि से दूर हटी। गांधीजी ने साधारण जनता के बीच में एक ऐसे वकील के रूप में पहचान बनाई जो कानूनी मामलों में सुझाव दे सकता था और जरूरत पड़ने पर पक्ष या विपक्ष में तर्क दे सकता था। साधारण जनता को वे अपने वस्त्र धुलते हुए दिखाई पड़ते थे। लोकजीवन के लिए यह छवि अति परिचित है। अपने गन्दे वस्त्र स्वयं साफ करना तो उनके स्वभाव में शामिल हो गया था। जरूरत पड़ने पर वे स्वयं अपने बाल काट लेते थे,हजामत कर लेते थे। इससे वे लोक में घुल-मिल गये। लोगों ने उन्हें मल या विष्ठा उठाते भी पाया। इससे अस्पृश्य माने जाने वाले लोगों ने उन्हें अपना समझा।

उन्हें जूता बनाते देखा गया। इससे जूता बनाने वाले लोगों ने उन्हें अपना समझना शुरू कर दिया। उन्होंने अपनी सेवा आप की और स्वावलंबन का मंत्र छोड़ गए। यह उस समय में बड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। उन्हें खाना पकाते देख लोकमानस में श्रम विभाजन का बोध समाप्त

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हुआ। गांधीजी उपचार करने में रूचि लेते थे और रोगी की सेवा-सुश्रूषा भी करते थे। यह उनके व्यक्तित्व का एक ऐसा पक्ष था जिसने बहुत से लोगों का ध्यान खींचा। वे पढ़ाते हुए भी देखे गये। इससे बहुत से लोगों में पढ़ने-पढ़ाने के प्रति ललक जागी। उस समय शिक्षा की हालत जिस प्रकार से थी उसे देखते हुए उनका यह रूप आज भी बहुत से लोगों को प्रेरित कर सकता है। वे वस्त्र बुनते हुए, रूई बांट कर कातते हुए देखे जा सकते थे। इससे बुनकर-कतैया समाज ने उन्हें अपने निकट समझा। उन्होंने अपना परिचय वणिक् के रूप में दिया था। इससे व्यापारियों में गौरव का भाव जाग्रत हुआ। उन्होंने कृषि कर्म में रूचि दिखाई तो कृषक समुदाय ने उन्हें अपने निकट पाया। कभी-कभार वे नीलामी के काम में भी दिखते और उन्हें देखने वाले अपने स्तर से प्रेरित होते। निश्चय ही, यह उनका अनोखा रूप था। लोगों को वे धन याचना करने वाले के रूप में तो दिखे ही, अनुचित रूप से धन ले लेने वाले साहसी व्यक्ति के रूप में भी प्रतीत हुए। भारतीय जनता ने उनके इस रूप को सहर्ष वैधता प्रदान कर रखी थी। बन्दी के रूप में वे सर्वत्र आदर के पात्र बने। उन्होंने संघर्षरत जनता को नेतृत्व प्रदान किया। वे प्रतिष्ठित लेखक के रूप में जाने जाते थे। वे अखबार के लिए लेख तो लिखते ही थे, अखबार निकालते भी थे और छापते तथा बाँटते भी थे। उन्होंने ऐसे नये प्रचलन प्रारंभ किये जो शीघ्र ही प्रचारित-प्रसारित हो गए। कभी-कभी तो उन्हें साँपों में भी खूब रूचि लेते हुए देखा गया। सँपेरा समुदाय उनसे अप्रभावित हुए बिना न रह सका। उन्होंने विवाह संस्कार और श्राद्ध कर्म में रूचि दिखाई। वे मंदिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा या पुनर्प्रतिष्ठा कराते हुए भी देखे गए। 'बहुरूप गांधी'[2] नामक पुस्तकमें उपरोक्त छवियाँ वर्णित हैं।

वस्तुत: गांधीजी में मनुष्य के कई रूप विद्यमान थे- अतिमानव, महामानव, साधारण मानव, लघु मानव, नगण्य मानव, अ-मानव इत्यादि। उनकी ऊर्जा और क्षमता के बारे में जानकर मन में यह संदेह उत्पन्न होने लगता है कि वे यंत्र मानव के गुणों को अपने में समाहित किए हुए तो नहीं थे? उनके ब्रह्मचर्य विषयक प्रयोगों के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व उन्नत और निर्मल था। उन्होंने अपने प्रयोगों से संबंधित बातों को इसलिए नहीं छिपाया क्योंकि उन्हें इनमें सार तत्व दिखा-इनसे भावी पीढ़ी लाभान्वित हो सकती थी। उनके पत्रों में प्रयुक्त संबोधन और अधोलेख अतिशय संवेदनशीलता दर्शाते हैं।

जिस समय गांधी जी सुदामापुरी में जन्मे उस समय देश के अधिकांश स्थलों पर जाति प्रथा अपने पुराने रूप में विद्यमान थी। गांधीजी ने जाति से ऊपर उठते हुए ऐसे कई काम किए जो समाज के लिए प्रेरक सिद्ध हुए। इससे सर्वजातिसमभाव को प्रोत्साहन मिला। उनका यह

कार्य शनै: शनै: सिद्धांत का रूप ले लेता गया। जाति के घेरे में बंधे हुए लोगों के लिए संभावनाओं के द्वार खुलते चले गए। गांधीजी के पिता राजकोट के दीवान थे। इसलिए उन्हें इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कोई झिझक महसूस नहीं हुई। वे संपन्न परिवार से थे, फिर भी अपने आधार को दुर्बल करते चले गए,डि-क्लास करते चले गए,उनका कोई सेविंग्स बैंक अकाउंट नहीं था। ऐसालक्ष्य केन्द्रित था-उन्हें ग़रीबी रेखा से बहुत नीचे रहने वाली जनता की छवि में,अंतिम जन में अपनी छवि देखनी थी। ऐसा करके वे स्वयं को भारतीय जनमानस के निकट महसूस करते थे। उन्होंने निर्धन से निर्धन जनता के हृदय में भी अपनी जगह बना रखी थी। इससे जनता आर्थिक आधार पर एक नया समाज बनाने की ओर अग्रसर हुई। गांधीजी ने 'न्यास'(ट्रस्टीशिप) के माध्यम से अपनी आर्थिक दृष्टि को सिद्धांत का रूप दिया।

गांधी के 'बहुरूप' भ्रष्टाचार को न्यूनतम करने या समूल नष्ट करने में बड़ी कारगर भूमिका निभाते हैं। यदि इसे अमल में लाया जाएगा तो कम-से-कम छींटे पड़ने की आशंका रहेगी या बेदाग़ रहेंगे। निम्न मध्यवित्त, निम्नवित्त और ग़रीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली जनता के लिए आवश्यकतानुसार हर प्रकार के उचित कर्म कर लेना बड़ा कारगर उपाय है। समृद्ध व्यक्ति इस स्तर पर बहुरूपी होता है कि धन के आधार पर उसकी सहायता के लिए अनेक व्यक्ति तत्पर रहते हैं।लेकिन निर्धनतम व्यक्ति को तो अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करना होगा तभी वह पैसे का अधिकाधिक सदुपयोग कर सकेगा!

उल्लेखनीय है कि शास्त्रों में कलाओं का उल्लेख है। अनेकों वर्णित कलाओं के रूप गांधीजी में भी विद्यमान थे। इस आधार पर उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का कलाकार माना जा सकता है। वस्तुत: गांधीजीके मानस में समग्र मनुष्य की परिकल्पना थी। इसी के अनुसार उन्होंने स्वयं को ढाला।

लेकिनलगता है, ब्रिटिश साम्राज्यवाद-उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने के पश्चात् गांधीजी अपने समय के बहुत से लोगों के लिए अप्रासंगिक होते चले जा रहे थे। गांधी जी जिस प्रकार की बातें कह रहे थे उससे इसी प्रकार का अनुमान लगाया जा सकता है[3]:

1. जब मैं अपनी आवाज उठाता हूँ तो कौन सुनता है?

2. ... हो सकता है मैं विफल ही मरूँ।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

3. अपने जन्मदिन के अवसर पर उन्होंने कहा था, '..... आज यह मातम मनाने का दिन है।..... शर्म लगती है। मैं वही शख्स हूँ जिसकी जबान से एक चीज निकलती थी कि ऐसा करो तो करोड़ों उसको मानते थे, पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नहीं है। मैं कहूँ, तुम ऐसा करो, नहीं, ऐसा नहीं करेंगे।'

4. गांधीजी को अपने 'ठीक' होने पर, 'सही' होने पर अन्त तक विश्वास था। उन्हें विश्वास था कि वे किसी दिन अपनी 'ठीक' बातों के लिए याद आएंगे, उनकी 'सही' बातें लोगों को याद आएंगी।

जवाहर लाल नेहरू अक्सर आपस में गांधीजी की 'खब्तों और विचित्रताओं' की चर्चा किया करते और 'थोड़ा हँसते' हुए कहते कि "स्वराज के बाद इन खब्तों को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए।" नेहरू जी को 'हिन्द स्वराज'(इंडियन होम रूल,1909)'बिल्कुल अवास्तविक' लगी थी। उन्होंने स्वयं गांधीजी को 'उस पुरानी स्थिति से आगे' पाया था। उन्हें ताज्जुब था कि गांधीजी के 'दिमाग में अभी तक वही तस्वीर बरकरार है।' उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा,"उसको अपनाना तो दूर कांग्रेस ने उस तस्वीर पर कभी विचार तक नहीं किया है। आपने भी सिवाय इसके छोटे-मोटे हिस्सों के, कभी कांग्रेस से इस तस्वीर को अपनाने के लिए नहीं कहा।"

सत्तारूढ़ तत्कालीन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि गांधीजी उसके लिए अब पहले जितने प्रासंगिक न रहे। सबसे पहली प्रवृत्ति तो यही दिखी कि अब भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार के बीज अंकुरित होने लगे थे। इतिहासकार बिपिन चन्द्र जब लिखते हैं कि "पटेल भाई भतीजावाद और भ्रष्टाचार को भी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करते थे।"[4]तब यही व्यंजित होता है। बिपिन चन्द्र ने लिखा है कि "स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक बाद से ही कांग्रेस का संबंध आम जनता से टूटने और पार्टी संगठन का स्तर नीचे गिरने लगा था।"[5]उन्होंने इस संदर्भ में एक राजनीतिशास्त्री के इस कथन को उद्धृत किया है: "कांग्रेस के अंदर भ्रष्टाचार, मोहभंग और गरिमा का ह्रास बढ़ता ही जा रहा था।"[6]1948 में ही तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने भी लक्षित किया था कि "हमारा बनाया आदर्श और नैतिकता का ढांचा लगातार ढहता जा रहा है।"[7] साथ ही यह भी कि"यह सोचना भी भयावह है कि हमारे सारे मूल्य समाप्त हो जाएंगे और हम लोग अवसरवादी राजनीति की कीचड़ में फँस जाएंगे।"[8] 1949 में उन्होंने लक्षित किया कि "हमने कुछ खो दिया है, शायद वह भावना, जो हमें संचालित करती थी और जब तक उस भावना को हम प्राप्त नहीं करते, तब तक हमारी मेहनत का फायदा थोड़ा ही मिलेगा।"[9] 1957 में उन्होंने कहा था, "कांग्रेस पार्टी कमजोर है और लगातार कमजोर होती जा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रही है..... हमारी मजबूती हमारे अतीत में है। यदि हम वर्तमान संकट से नहीं उबरे तो कांग्रेस पार्टी का भविष्य अंधकारमय है।"[10] बिपिन चन्द्र ने "वोट बैंक की राजनीति और राजनीतिक दलाली का धंधा" शुरू होने की बात लिखी है। उन्होंने और भी कई बातें लिखी हैं, जैसे- "कांग्रेस का आम जनता के साथ संपर्क उत्तरोत्तर घटता चला गया। और बुद्धिजीवियों और युवा पीढ़ी के अन्दर भी इसकी अपील क्षीण होने लगी। बेहतरीन बुद्धिजीवी और युवा, पार्टी की सदस्यता से कतराने लगे।"[11] कुछ घटना-क्रमों ने यह धारणा फैला दी कि "कांग्रेस पद लोलुप लोगों की पार्टी है।"[12] ऐसे में यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि सत्तारूढ़ दल के लोगों के लिए गांधीजी बड़ी तीव्र गति से अप्रासंगिक हुए चले जा रहे थे।

नेहरू युग में ही गांधीवादी मूल्यों की किस तरह से उपेक्षा होने लगी थी इसे हिंदी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की काव्यात्मक संवेदना से सम्यक् रूप से समझा जा सकता है। 'इस नगरी में' नामक कविता मेंकवि को स्वतंत्र भारत में'खद्दर वर्दी पहने प्यारे जनरल डायर' दिखते हैं। कवि ने उन 'अच्छे अच्छे लोगों' का वर्णन कियाहै जो 'शैतानों के झबरे बच्चे' के रूप में परिणत होते चले जा रहे थे। ये लोग 'एक जमाने में जनता के आंगन में नंगे खेले थे।' वे 'जन जन की पगडंडी' पर 'जन-मन' के थे। अब 'उनके चेहरे पर / विद्युत-वज्र गिराने वाले / बादल की कठोर छाया'[13] विद्यमान है। अब वे 'लंबे-लंबे बालों वाले भयंकर श्वान का रूप धारण कर चुके हैं जो कि 'स्वार्थी मालिक कीसी सूरत' लिए हुए हैं। कवि व्यंग्य करते हुए कहता है कि इन्होंने खूब रखवाली कीकइयों के घर-बार उजाड़ डाले, आंतें फाड़ डाली। इनमें से कोई रीछ के रूप में तो कोई शूकर के रूप में घर के पिछवाड़े में नाच रहे हैं। कोई पिंजरे का तोता बनकर स्वामी द्वारा दी गई सिद्धांतावलियां रटने में लगा हुआ है।[14]आलोचक नामवर सिंह ने लिखा है कि 'मुक्तिबोध के काव्य संसार की पटभूमि में...ऐसी शासन व्यवस्था है जो निहायत चालाक होने के साथ-साथ बेहद आततायी है।'[15] मुक्तिबोध की कवि दृष्टि में निहित ईमानदारी संदेह से परे है।

उपसंहार

गांधी मार्ग सच्चाई पर क़ायम रहने में विश्वास करता है। इसके लिए वह अहिंसा का रास्ता अपनाता है। गांधीजी सत्य-अहिंसा के रास्ते पर आख़िरी समय तक चलते रहे। इसी रास्ते पर चलते हुए उन्होंने भारतीय मुक्ति संग्राम का नेतृत्व किया। भारतवासी कई शताब्दियों से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े हुए थेब्रिटिश राजसत्ता का चेहरा निर्मम और क्रूर था। यह 1857 के विद्रोह के शमन के दौरान भली-भाँति स्पष्ट हो गया था। गांधीजी इस इतिहास से भली-भाँति

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अवगत थे। उन्होंने सत्याग्रह के रास्ते को अपनाया और भारतीय मुक्ति आंदोलन को व्यापक जनाधार वाला बनाया। जनांदोलन का रूप देने के लिए उन्होंने कई तरीक़े भी अपनाए। लेकिन गांधी मार्ग ऐसा मार्ग नहीं साबित हुआ जिस पर बहुसंख्यक जनता चल पाती। कईएक छोटे-छोटे रास्ते थे,अनेक पगडंडियाँ थीं।

अस्तेय (अर्थात् चोरी न करना) के उपदेशक गांधीजी ने सिद्धांत प्रतिपादन के क्रम में चोरी करने के काम को त्याग कर साहूकार बने जिस व्यक्ति का दृष्टांत प्रस्तुत किया है वह अहिंसा के दर्शन से असहमति जताने वालों की दृष्टि मेंविवादास्पद है।

गांधी मार्ग का निर्माण पराधीनता के दौर में हुआ था। पराधीनता का दौर गुजर जाने के बाद इस मार्ग की आभा बदली हुई वास्तविकता के समक्ष फीकी पड़ गयी।स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की वास्तविकता में बदलाव आ गया जिससे गांधी मार्ग की सीमाएँ स्पष्ट होने लगी।स्वतंत्रता प्राप्ति में गांधी जी के अवदान का उल्लेख करते समय हम अन्य बातों का उल्लेख नहीं करते। अन्य बातों के उल्लेख से गांधी मार्ग का सम्यक् विवेचन संभव हो सकेगा। भारत छोड़ो आंदोलन में 'करो या मरो' का नारे का स्वर असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन से किंचित भिन्न था। इसलिए इसमें उग्रता थी।द्वितीय महायुद्ध की वजह से अंग्रेजों की सत्ता पर पकड़ ढीली हो गयी थी और वे दुर्बल हो गए थे।अमेरिकी शक्ति का अभ्युदय हो चुका था।नौ सैनिकोंद्वारा किए गए प्रतिरोध ने अंग्रेजों को सांध्य बेला की सूचना दे दी थी।आज़ाद हिंद फ़ौज का सशस्त्र प्रतिरोध जनमानस में साहस का संचार कर चुका था।आज़ादी के तुरंत बाद कश्मीरमें कबायलियों का आक्रमण और उनके द्वारा की गयी नृशंसताऔर ज़मीन का क़ब्ज़ियाया जाना,चीन द्वारा अक्साई चिनक़ब्ज़ियाना और बाद में अरुणाचल प्रदेश (तत्कालीन नॉर्थ ईस्ट फ़्रंटीयर एजेन्सी) पर हमला करते हुए असम तक बढ़ आना आदि से सम्बंधित घटनाओं ने भी सत्य-अहिंसा मार्ग की सीमाएँ इंगित की।

गांधी युग में आंदोलन चलाने के लिए जो आर्थिक स्रोत ढूँढे गए उसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बदलाव आ गया। पहले लक्ष्य आज़ादी प्राप्ति थी अब सत्तारूढ़ पार्टी सत्ता-शक्ति के केंद्र में आ गयी। पार्टी के लक्ष्य सत्ता और शक्ति के आसपास केंद्रित होने लगे। सत्ता और शक्ति के कारण पार्टी की ओर स्वार्थ केंद्रित व्यक्तिगत आकांक्षाओं की पूर्ति के इच्छुक लोग बड़ी तीव्र गति से आकर्षित हुए। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बड़े भू स्वामियों, अमीरों और बड़े व्यापारियों ने अपने चंदे से गांधी की रणनीति को जाने-अनजाने प्रभावित किया था।इन वर्गों का समर्थन गांधीजी के लिए आवश्यक था।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजे-रजवाड़ों में से कुछ में प्रजा पालक वाला राजत्व सिद्धांत यथावत था।गांधी जी द्वारा समर्थित रामराज्य वाली संकल्पना में इसका अलग से अनिवार्य रूप से उल्लेख नहीं हुआ था। यदि इस ओर ध्यान दिया गया होता तो आज़ाद भारतमें हिंसक प्रतिरोध कम ही हुए होते।

गांधीजी के विरोध के बावजूद त्रिपुरी अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिए चयनित और आगे चलकर अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा देकर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से भी इस्तीफ़ा देकर फॉरवार्ड ब्लॉक की स्थापना करने वाले,फिर आज़ाद हिन्द फ़ौज के संस्थापक और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' केउद्घोषक,गांधीजी को बापू की उपाधि से विभूषित करने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस के स्वर में नयी पीढ़ी का स्वर भी शामिल था। ऐसा प्रतीत होता है कि गांधीजी इस स्वर को गम्भीरतापूर्वक कम ही सुन सके। इसी तरह अनेक विसंवादी स्वरों को गांधी मार्ग अपने में मिला सकने में समर्थ सिद्ध नहीं हो सका। यह भी सच है कि सभी विद्यमान विसंवादी स्वरों से मेल स्थापित करने की अपेक्षा करना एक सीमा के बाद उचित नहीं है।

फिर भी गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। गांधीजी का यह स्वानुभूत दर्शन था। इस दृष्टि को अर्जित करने में पर्यवेक्षण का योगदान कम न था। गांधीजी ने स्वयं को जनसाधारण से एकाकार कर लिया था। यही कारण है कि साधारण जनता ने उन्हें अपना मान लिया था। इससे वे राष्ट्रपिताकी पदवी तक पहुँच सके। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति की पूर्व संध्या में और स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रभात वेला में गांधीजी की नेतृत्वकारी क्षमता शिथिल हो गयी और वे भारतीय राजनीति के मंच से लगभग हटसे गए थे। यह तथ्य गांधी मार्ग की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।मुस्लिम अल्पसंख्यकों के प्रति अतिशय लगाव के बावजूद देश विभाजन की त्रासद घटना ने गांधी दृष्टि को प्रश्नों के घेरे में ला दिया था। गांधीजी ने जिन मूल्यों को प्रोत्साहित किया था उनमें बहुत से मूल्य स्वाधीनता प्राप्तिके प्रथम दशक में ही आभाहीन प्रतीत होने लगे थे। भ्रष्टाचार,घोटाले, भाई-भतीजावाद आदि के पनपने का दौर नेहरू युग में ही प्रारम्भ हो गया था। प्रख्यात हिंदी कवि मुक्तिबोध ने भी मूल्यों के पतन से संबंधित लक्षणों को लक्षित किया था।आज़ादी से पहले जनता में अंशदान की परंपरा की नींव पड़ चुकी थी। मगर आज़ादी के तुरंत बाद लोकलुभावने वादों और लोभ-लालच का दौर शुरू होने की आशंका मंडराने लगी, आज की राजनीति इसका प्रमाण है।बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने जिस दलित प्रश्न को उठाया था वह बाद में बड़े व्यापक स्तर पर सामाजिक न्याय के प्रश्न के रूप में सामने आया। आर्थिक विकास की नीति के मामले में नेहरू जी ने ही गांधी मार्ग से भिन्न राह पकड़ी थी। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित 'न्यास'(ट्रस्टीशिप)का सिद्धांत प्रायोगिक रूप में

नहीं दिखा और न ही कोई इस सिद्धांत का अनुयायी हुआ। यह गांधीजी तक ही सीमित होकर रह गया।उनकी ब्रह्मचर्य की संकल्पना भी विवादों के घेरे में रही।ब्रह्मचर्य से सम्बंधित प्रयोगों की आलोचना भी कम न हुई।गांधी मार्ग में भौतिकता के लिए बहुत कम जगह थी। इसलिए यह बहुसंख्यक जनता में स्वीकार्य न हो सका। अतः यह विचार भी गांधीजी तक ही सिमटकर रह गया।

गांधी मार्ग आज भी कुछ लोगों में प्रचलित है और चाहे-अनचाहे कई लोग इस मार्ग पर कुछ समय के लिए या फिर कभी-कभारचल पड़ते हैं। यह गांधी मार्ग की महत्ता का प्रमाण है। हमारा देश विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य है।इस दृष्टि से सत्य-अहिंसा के सिद्धांत का महत्व कभी कम न होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.गांधीजी:मंगल-प्रभात(अनुवादक-अमृतलालठाकोरदास नाणावटी),नवजीवन प्रकाशन मन्दिर,अहमदाबाद-14,जनवरी, 2003,पृष्ठ संख्या: 7-15

2. अनु वन्द्योपाध्याय: बहुरूप गांधी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, पुनर्मुद्रण: जनवरी, 2006

3. उद्धृत, सूरज पालीवाल: अकेले तथा करुण होते गांधी और उनके विचार, स्रोत-इण्टरनेट

4. बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी: आजादी के बाद का भारत (1947-2000), हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, द्वितीय संस्करण: फरवरी,2002, पृष्ठ संख्या: 257

5. वही:पृष्ठ संख्या: 261

6. वही

7. वही

8. वही: पृष्ठ संख्या: 262

9. वही

10. वही

11. वही:पृष्ठ संख्या: 261

12. वही

13. मुक्तिबोध रचनावली-2: सं. नेमिचन्द्र जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति: 1998, पृष्ठ संख्या: 297

14. वही:पृष्ठ संख्या: 298, 299

15. नामवर सिंह: कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ सं.,पृष्ठ संख्या: 231